॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

मेरे नाथ ! मेरे प्रभो !

परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

मेरे नाथ! मेरे प्रभो!

[परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराजके प्रवचनोंसे संगृहीत]

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

'हे प्रभो! आप ही मेरी माता हो, आप ही पिता हो, आप ही बन्धु हो, आप ही सखा हो, आप ही विद्या हो, आप ही धन हो। हे देवदेव! मेरे सब कुछ आप ही हो।'

संकलन-सम्पादन—
राजेन्द्र कुमार धवन

गीता प्रकाशन, गोरखपुर

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

मेरे नाथ! मेरे प्रभो!

भगवत्प्राप्तिके बहुत साधन हैं। उन साधनोंमें आजकल मेरेको एक विचित्र साधन मिला है, जो देखनेमें नहीं आता है! वह है—'हम भगवान्‌के हैं'। आपको यह साधारण दीखता होगा, पर मेरी दृष्टिमें बहुत विचित्र है। हम सब-के-सब भगवान्‌की सन्तान हैं—यह मामूली बात नहीं है। **इससे भगवत्प्राप्ति बहुत सुगम हो जाती है।** (१२.१०.१९९९, प्रातः ९, दिल्ली) (सीमाके० २१०)

***　　　　***　　　　***

साधक—स्वामीजी, पहले आपने बताया कि भगवान्‌के शरण होकर नामजप करो, फिर आपने बताया कि 'हे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं'—यह बार-बार कहते रहो, अब आप बताते हैं कि भगवान् मेरे हैं—ऐसा मान लो, तो कौन-सा साधन करें?

स्वामीजी—जो अब बताते हैं, वह करो। सभी साधन श्रेष्ठ हैं, पर भगवान् मेरे हैं—यह भगवान्‌के नजदीक पड़ता है। उपासनामें यह बात है कि हम जितना भगवान्‌के नजदीक होंगे, उतनी उपासना बढ़िया होगी। (६.२.२००१, सायं ३, बीकानेर) (अनन्त० १६४)

***　　　　***　　　　***

साधक—अच्छे कर्म करना या संसारको अपना न मानना या भगवान्‌को अपना मानना—तीनों साधनोंमें कौन-सा साधन बढ़िया है, जिससे हमारे राग-द्वेष दूर हो जायँ और हमारा कल्याण हो जाय?

स्वामीजी—**भगवान्‌को अपना मानना सबसे श्रेष्ठ साधन है।** भगवान्‌को अपना माननेसे भगवत्कृपासे राग-द्वेष भी दूर हो जाते हैं, समता भी आ जाती है, शान्ति भी मिल जाती है, मुक्ति भी हो जाती है। कारण कि मूलमें हम भगवान्‌के अंश हैं—'**ममैवांशो जीवलोके**' (गीता १५। ७)। इस मूलको ठीक करनेसे सब ठीक हो जायगा। (९.१.२०००, प्रातः ९, सूरत) (बिन्दुमें० १९)

***　　　　***　　　　***

अगर आप सुगमतासे भगवत्प्राप्ति चाहते हैं तो मेरी प्रार्थना है कि आप 'मैं भगवान्‌का हूँ'—यह मान लें। यह 'चुप साधन' अथवा 'मूक सत्संग' से भी बढ़िया साधन है! जैसे आपके घरकी कन्या विवाह होनेपर 'मैं ससुरालकी हूँ'—यह मान लेती है, ऐसे आप 'मैं भगवान्‌का हूँ'—यह मान लें। यह सबसे सुगम और सबसे बढ़िया साधन है। इसको भगवान्‌ने सबसे अधिक गोपनीय साधन कहा है—'**सर्वगुह्यतमम्**' (गीता १८। ६४)। गीताभरमें यह '**सर्वगुह्यतमम्**' पद एक ही बार आया है। मैं हाथ जोड़कर प्रेमसे कहता हूँ कि मेरी जानकारीमें यह सबसे बढ़िया साधन है। (८.१.२०००, सायं ४, सूरत) (बिन्दुमें० १८)

***　　　　***　　　　***

मेरे मनमें आती है कि परमात्माको अपना मानें तो बहुत जल्दी काम हो जाय। **भगवान् मेरे हैं—ऐसा मान लिया तो बहुत काम हो गया, भगवान्‌के बहुत नजदीक आ गये!** आपको जो निवृत्ति करनी है, वह अब प्रभुकी कृपासे, उनकी शक्तिसे होगी। ज्ञानमार्ग और कर्ममार्गमें साधन और साध्य दो होते हैं, पर भक्तिमार्गमें साधन भी भगवान् हैं और साध्य भी भगवान् हैं। इसलिये भक्तिमार्गका रास्ता बहुत जल्दी कटता है। इस बातको हरेक आदमी जानता नहीं। हरेक जगह यह बात मिलती

नहीं। इसलिये मैं भगवान्‌को अपना माननेपर जोर देता हूँ। भगवान् हमारे पिता हैं। हम सब उनके लाड़ले बेटा-बेटी हैं। यह मान लो तो बहुत काम हो गया! (७.५.२०००, प्रातः ५, ऋषिकेश) (बिन्दुमें० १७३)

*** *** ***

भगवान्‌को याद करनेसे भी बढ़िया चीज है—भगवान्‌के साथ अपना सम्बन्ध मानना कि मैं भगवान्‌का हूँ। सम्बन्ध अखण्ड होता है। सम्बन्ध माननेसे भगवान्‌की याद स्वतः आती है, करनी नहीं पड़ती। बिना याद किये याद आती है। मेरी माँ है—इस प्रकार माँको मान लिया तो अब याद करनेकी जरूरत नहीं। जैसे धनी आदमीके भीतर एक गरमी रहती है कि मेरे पास इतना धन है, ऐसे ही आपके भीतर गरमी रहनी चाहिये कि मैं भगवान्‌का हूँ!

अस अभिमान जाइ जनि भोरे। मैं सेवक रघुपति पति मोरे॥

(मानस, अरण्य० ११। ११)

आप कैसे ही हों, इस बातको मत छोड़ो कि हम भगवान्‌के हैं। सुख आये या दुःख आये, स्वस्थ रहें या बीमार रहें, नफा हो जाय या घाटा लग जाय, पर 'मैं भगवान्‌का हूँ, भगवान् मेरे हैं'—इस सिद्धान्तसे कभी आपका मन विचलित नहीं होना चाहिये। (१२.१०.२०००, सायं ४, जयपुर) (अनन्त० ४७)

*** *** ***

भगवान्‌के साथ अपनापन माननेके समान दूसरा कोई साधन नहीं है, कोई योग्यता नहीं है, कोई बल नहीं है, कोई अधिकारिता नहीं है।......प्रभुको अपना माननेमें मन, बुद्धि आदि किसीकी सहायता नहीं लेनी पड़ती, जबकि दूसरे साधनोंमें मन, बुद्धि आदिकी सहायता लेनी पड़ती है।.......साधक भक्तमें कुछ गुणोंकी कमी रहनेपर भी भगवान्‌की दृष्टि केवल अपनेपनपर ही जाती है, गुणोंकी कमीपर नहीं। कारण कि भगवान्‌के साथ हमारा जो अपनापन है, वह वास्तविक है। (साधक-संजीवनी ७।१६ वि०)

*** *** ***

जो भगवान्‌को अपना मान लेता है, वह संसारसे ऊँचा उठ जाता है, सन्त-महात्मा हो जाता है। उसको शान्ति मिल जाती है, आनन्द मिल जाता है। उसको किसी चीजकी परवाह नहीं रहती। इसलिये भगवान्‌को अपना मानकर मस्त हो जाओ। **'मैं भगवान्‌का हूँ'—इस बातको भूलो मत तो भगवान् जरूर मिलेंगे। अपने-आप सत्संग मिलेगा, सन्त-महात्मा मिलेंगे।** (१२.१.२०००, सायं ४, सूरत) (बिन्दुमें० ३०)

*** *** ***

सबसे विलक्षण चीज है—भगवान्‌के साथ सम्बन्ध। सम्बन्ध जोड़नेसे बहुत जल्दी उन्नति होती है। भगवन्नामका जप, ध्यान, कीर्तन आदि निरन्तर नहीं होते, बीचमें अन्तर पड़ता है; परन्तु भगवान्‌के सम्बन्धमें अन्तर नहीं पड़ता। जैसे नींद लेनेसे विवाहका सम्बन्ध मिट नहीं जाता, ऐसे ही नींद लेनेसे अथवा भूल जानेसे भगवान्‌का सम्बन्ध मिट नहीं जाता। यह नित्य-निरन्तर अटल रहता है। जप आदि करनेमें थकावट भी होती है, पर सम्बन्धमें थकावट होती ही नहीं। यह सम्बन्ध तत्काल होता है और सदाके लिये होता है, जैसे विवाह। आप तोड़ो, तभी टूटता है। **आप भगवान्‌को अपना मान लो तो इस सम्बन्धको भगवान् भी तोड़ नहीं सकते!** (१५.१.२०००, प्रातः ५, मुम्बई)

(बिन्दुमें० ३२-३३)

***   ***   ***

जीव भगवान्‌का अंश है; अत: वह किसी भी तरहसे भगवान्‌से सम्बन्ध जोड़ ले, उसका कल्याण ही होगा। भगवान्‌का सम्बन्ध कल्याण करनेवाला है। जिसने भगवान्‌से वैर किया, उसका (कंस, शिशुपाल आदिका) भी कल्याण हो गया और जिसने भगवान्‌से प्रेम किया, उसका भी कल्याण हो गया, पर जिसने भगवान्‌से कोई सम्बन्ध नहीं जोड़ा, उसका कल्याण नहीं हुआ। **कोई कहता है कि 'भगवान् मेरे हैं' तो भगवान्‌को बड़ा आनन्द आता है!** वास्तवमें भगवान्‌के सिवाय अपना कोई है ही नहीं। आप सांसारिक चीजोंमें लगकर भले ही भगवान्‌को भूल जाओ, पर भगवान् आपको कभी भूलते नहीं।

साधक—भगवान्‌से सम्बन्ध जोड़नेके बाद क्या कामना रहते हुए भी भगवान्‌की प्राप्ति हो सकती है?

स्वामीजी—हाँ, कामना रहते हुए भी भगवान् मिल सकते हैं और भगवान्‌के मिलनेपर कामना नहीं रहेगी। (२५.१.२०००, प्रात: ९, मुम्बई) (बिन्दुमें० ५७)

***   ***   ***

मूल भूल यह है कि जो अपना नहीं है, उस (शरीर-इन्द्रियाँ-मन-बुद्धि)-को अपना मान लिया और जो अपना है, उस परमात्माको अपना नहीं माना। इस एक भूलमें सब भूल है। गणितमें एक अंककी भी भूल हो जाय तो सब-का-सब रद्दी हो जाता है, एक भी नम्बर नहीं मिलता। इसलिये कम-से-कम आप इतना मान लें कि 'हम परमात्माके हैं और परमात्मा हमारे हैं'। (२६.१.२०००, प्रात: ९, मुम्बई) (बिन्दुमें० ६०)

***   ***   ***

भगवान्‌को प्रकट करनेके लिये, उनका प्रेम प्राप्त करनेके लिये भगवान्‌को अपना मानना बहुत जरूरी है। जैसे बालक कहता है कि माँ मेरी है, ऐसे भगवान् मेरे हैं। भगवान्‌में मेरापन प्रेमका मन्त्र है, जिससे भगवान् प्रकट हो जाते हैं। आपके भीतर यह भाव आना चाहिये कि मेरी माँ मेरेको गोदमें क्यों नहीं लेती? (१.२.२०००, सायं ४, ईरोड) (बिन्दुमें० ७२)

***   ***   ***

आप दृढ़ताके साथ भगवान्‌को अपना स्वीकार कर लें तो इसका महान् फल होगा, आपका जीवन सफल हो जायगा! इससे मेरे चित्तमें बहुत प्रसन्नता होगी और आपको भी प्रसन्नता होगी, आनन्द होगा! इस बातको स्वीकार करनेमें लाभ-ही-लाभ है, नुकसान कोई है ही नहीं! यह कोई मामूली बात नहीं है। यह वेदोंका, गीताका, रामायणका भी सार है! आप नहीं मानो तो भी सच्ची बात सच्ची ही रहेगी, कभी झूठी नहीं हो सकती। आप अपनी तरफसे मान लो, फिर आपके माननेमें कोई कमी रहेगी तो उसे भगवान् पूरी करेंगे। पर एक बार स्वीकार करके फिर आप इसे छोड़ना मत। मैं भगवान्‌का हूँ—यह मानते रहो तो आप अपने-आप शुद्ध, निर्मल हो जाओगे। जो लोहेका सोना बना दे, उस पारससे भी क्या भगवान् कमजोर हैं? भगवान्‌के सम्बन्धसे जैसी शुद्धि होती है, वैसी अपने उद्योगसे नहीं होती। **वर्षोंतक सत्संग करनेसे जो लाभ नहीं होता, वह भगवान्‌को अपना मान लेनेसे एक दिनमें हो जाता है!** (१७.२.२०००, प्रात: ८.३०, ढालेगाँव) (बिन्दुमें० ८६-८७)

***   ***   ***

सांसारिक वस्तुओं तथा व्यक्तियोंको जितना अपना मानोगे, उतना परमात्मामें अपनापन दीखेगा नहीं। **जब यह ठीक अनुभव हो जायगा कि अनन्त ब्रह्माण्डोंमें तिल-जितनी वस्तु भी अपनी नहीं है, शरीर-इन्द्रियाँ-मन-बुद्धि-अहम् भी अपने नहीं हैं और अपने लिये भी नहीं है, तब असली तत्त्व समझमें आयेगा।** (१९.२.२०००, प्रात: ५, ढालेगाँव) (बिन्दुमें० ८८)

***   ***   ***

तीनों शरीरोंसे होनेवाली क्रिया, चिन्तन और समाधि भी अपनी और अपने लिये नहीं है। **क्रिया, चिन्तन और समाधिसे सम्बन्ध-विच्छेद होनेपर जिसकी प्राप्ति होती है, वह तत्त्व ही अपना और अपने लिये है।** उसी परमात्मतत्त्वके हम अंश हैं। मनुष्य जबतक शरीर-संसारको अपना और अपने लिये मानता रहेगा, तबतक वह बातें सुन लेगा, सीख लेगा, सुना देगा, व्याख्यान दे देगा, पर उस तत्त्वको ठीक नहीं समझेगा। (१९.२.२०००, प्रात: ५, ढालेगाँव) (बिन्दुमें० ८८-८९)

***   ***   ***

भगवान्‌को अपना माने बिना भजन करनेसे भजनकी वैसी सिद्धि नहीं होती। परन्तु भगवान्‌को अपना मान लें तो भजन किये बिना स्वाभाविक भजनकी सिद्धि हो जायगी! मैं भगवान्‌का हूँ—ऐसा भीतरसे मान लें तो आपकी अवस्था बदल जायगी, आपका पूरा परिवर्तन हो जायगा, आपको शान्ति मिल जायगी, आपकी शंका मिट जायगी, सन्देह मिट जायगा! 'हे नाथ! मैं आपका हूँ'—इतना भीतरसे मान लो तो संसारका सम्बन्ध स्वत: छूट जायगा। संसारको छोड़नेके लिये आपको प्रयत्न नहीं करना पड़ेगा। (२९.२.२०००, सायं ४, अहमदाबाद) (बिन्दुमें० १०८)

***   ***   ***

आजकल मेरी एक धुन लगी है—भगवान्‌को अपना मानना। मेरे मनमें यह बात विशेषतासे आ रही है कि आप किसी तरहसे भगवान्‌के साथ सम्बन्ध जोड़ लो, चाहे भगवान्‌को बेटा मानो, बाप मानो, माँ मानो, भाई मानो, मित्र मानो, गुरु मानो, चेला मानो, मालिक मानो, नौकर मानो, कुछ भी मानो। इतनी-सी बात मानो तो बहुत लाभकी बात है! **आप मानो, चाहे मत मानो, मैं तो कहता रहूँगा, अपने कर्तव्यका पालन करता रहूँगा! आप नहीं मानो तो मैं आपसे नाराज नहीं होऊँगा, पर मेरे चित्तमें प्रसन्नता नहीं होगी।** (५.३.२०००, सायं ३.३०, बीकानेर) (बिन्दुमें० ११०)

***   ***   ***

साधन (क्रिया) निरन्तर नहीं होता, पर सम्बन्ध निरन्तर होता है। **साधक कोई-सा भी साधन करे, पर अपना सम्बन्ध परमात्माके साथ ही रखे।** जबतक अन्यके साथ सम्बन्ध रहेगा, तबतक भजन नहीं होगा। **जिसको आप भगवत्प्राप्तिका साधन मानते हैं, वह वास्तवमें भगवत्प्राप्तिका साधन नहीं होता। असली साधन तब होता है, जब आपका सम्बन्ध भगवान्‌के साथ होता है।** जैसे स्त्री पीहरमें आती है तो वह पीहरका सब काम भलीभाँति करते हुए भी मनसे ससुरालकी बनी रहती है, ऐसे ही आप भगवत्प्राप्ति चाहते हैं तो संसारमें रहते हुए भी भीतरसे सम्बन्ध भगवान्‌के साथ रखो। सन्तसे, गुरुसे भी सम्बन्ध मत जोड़ो; उनकी बात मानो।

आप भगवान्‌के हो जाओ तो आपका सब काम भगवान्‌का भजन हो जायगा। **हम भगवान्‌के हैं, भगवान् हमारे हैं—यह असली भजन है।** (१२.३.२०००, सायं ३.३०, बीकानेर) (बिन्दुमें० ११७)

***   ***   ***

भगवान् हमारे हैं, हम भगवान्‌के हैं—इस प्रकार भगवान्‌से सम्बन्ध होनेपर भगवान्‌को याद करना नहीं पड़ेगा, प्रत्युत उनकी याद स्वत: आयेगी। संसारमें तो धन-सम्पत्ति ज्यादा होनेसे इज्जत होती

है, पर भगवान्‌के यहाँ इज्जत होती है भगवान्‌के सम्बन्धसे! **एक भगवान्‌के साथ सम्बन्ध जोड़नेसे आपका सब घाटा, सब चिन्ता, सब शोक, सब हलचल मिट जायगी! आप पूर्ण हो जाओगे!** (५.४.२०००, प्रात: ८.३०, सींथल) (बिन्दुमें० १३२)

*** *** ***

परमात्मप्राप्ति बहुत सुगम है—यह बात भी आती है, और परमात्मप्राप्ति बहुत कठिन है—यह बात भी आती है। कानून-कायदेके अनुसार देखा जाय तो परमात्मप्राप्ति बहुत कठिन है; परन्तु हृदयका भाव हो तो बहुत सुगमतासे प्राप्ति हो जाय। जैसे बालक कहता है कि मेरी माँ है, ऐसे भगवान् हमारे हैं—ऐसा सीधा-सरल भाव हो जाय। **हृदयके भावके बिना प्राप्ति बड़ी कठिन है।** भगवान् भावग्राही हैं। बालक मानता है कि मेरी माँ है तो इसमें क्या कानून लगेगा? बच्चेको अपनी योग्यता, पात्रताकी तरफ ध्यान ही नहीं है। वह अपनेपनके बलसे माँपर पूरा कब्जा कर लेता है। इस तरह भगवान् अपने हैं—ऐसा मान लो। बालक रोता है तो माँको सब काम छोड़कर आना पड़ता है। इसलिये साधे-सरल भावसे भगवान्‌को 'हे नाथ! हे मेरे नाथ!' पुकारो। **भगवान् मेरे हैं—इससे सब बातें पीछे छूट जाती हैं!**

कानून-कायदा न लगाकर '*भगवान् मेरे हैं*'—इस एक वृत्तिको विशेषतासे बढ़ाओ। भगवान्‌में अपनापन विशेष तेज होना चाहिये। दूसरी बातोंकी तरफ ध्यान ही मत दो। **अपनी कमियोंकी तरफ मत देखो, प्रत्युत भगवान्‌के कृपालु स्वभावकी तरफ देखो।** (२७.४.२०००, सायं ४, ऋषिकेश) (बिन्दुमें० १५७-१५८)

*** *** ***

एक भगवान्‌के सिवाय दूसरा कोई हमारा बन सकता नहीं, हमारे साथ रह सकता नहीं। जैसे अपने बच्चेको खेलते देखकर माँके हृदयमें स्नेह उमड़ता है, ऐसे इस जीवको देखकर भगवान्‌के हृदयमें प्यार आ रहा है कि मैं इसको अपना लूँ, इससे मिलूँ, बात करूँ! परन्तु यह जीव भगवान्‌की तरफ देखता ही नहीं! इसलिये आप सबसे मेरा कहना है कि आप कैसे ही हों, कम-से-कम, कम-से-कम यह बात याद रखो कि भगवान् मेरे हैं। (२९.४.२०००, प्रात: ८.३०, ऋषिकेश) (बिन्दुमें० १६२)

*** *** ***

'मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई'—यह मान लो तो दु:ख कभी होगा ही नहीं। इसे माननेसे हानि है ही नहीं, कोरा लाभ-ही-लाभ है। **शरीर-इन्द्रियाँ-प्राण-मन-बुद्धि आदि कुछ भी मेरा नहीं है, केवल भगवान् ही मेरे हैं—यह मान लो तो निहाल हो जाओगे, निहाल हो जाओगे, निहाल हो जाओगे!!** आपको कोई बाधा नहीं रहेगी। बीमारीमें भी दु:ख नहीं होगा, प्रत्युत आनन्द होगा! शरीरमें शक्ति नहीं रहेगी, पर भीतर आनन्द रहेगा! आपको चार-पाँच डिग्री बुखार हो जाय, आपका बोलना बन्द हो जाय, आप बेहोश हो जायँ, तो भी भीतरके आनन्दमें फर्क नहीं पड़ेगा! यह बिलकुल सच्ची बात है। (५.५.२०००, प्रात: ८.३०, ऋषिकेश) (बिन्दुमें० १६९)

*** *** ***

आप सत्संग करने आये हो तो इतनी बात मान लो कि हम जैसे भी हैं, भगवान्‌के हैं। एक भगवान्‌को अपना न माननेसे दु:ख पाना ही पड़ेगा, इसमें सन्देह नहीं है। जगह-जगह जन्मोगे, मरोगे, दु:ख पाओगे! भगवान्‌के हो गये तो अब मौज करो! अब कुछ करनेकी जरूरत नहीं। भगवान्‌को अपना मान लो तो भगवान् भी राजी, सन्त भी राजी, सब लोग राजी। कोई नाराज नहीं; क्योंकि

हमने किसीका हिस्सा लिया ही नहीं। अपना हिस्सा लिया है। भगवान्‌को अपना माननेमें कुछ मेहनत नहीं, कुछ खर्चा नहीं, कुछ सीखना नहीं, कुछ पढ़ना नहीं, कुछ याद करना नहीं, कुछ योग्यता नहीं। संसारमें हमारा कुछ नहीं—यह जानना है और भगवान् हमारे हैं—यह मानना है। (८.५.२०००, प्रात: ८.३०, ऋषिकेश) (बिन्दुमें० १७७)

*** *** ***

संसारमें हमारी कोई चीज नहीं है—इसमें जितनी शंका करो, सब चलेगी; परन्तु भगवान् हमारे हैं—इसमें शंका नहीं चलेगी। इसको तो मानना ही पड़ेगा। पहले संसारको जानना पड़ता है और भगवान्‌को मानना पड़ता है। पीछे भगवान् माने हुए नहीं रहते, साक्षात् हो जाते हैं।

भगवान् हरदम आपको देखते रहते हैं। **जैसे बच्चा माँ-माँ कहे तो माँ खुश हो जाती है, ऐसे ही जब आप भगवान्‌को अपना कहते हैं, तब भगवान्‌को बहुत खुशी होती है!** (१२.५.२०००, सायं ४, ऋषिकेश) (बिन्दुमें० १८६)

*** *** ***

आप भगवान्‌के अंश हो, यह बात आप हरदम याद रखो। यह बात मैं आपको बार-बार इसलिये कहता हूँ कि इन वर्षोंमें यह बात मुझे ज्यादा जँची है! पहले मेरा इस तरफ इतना ख्याल नहीं था। जैसे आपके घरकी कन्या विवाहके बाद उस घरकी हो जाती है, ऐसे ही आप भगवान्‌के घरके हो जाओ। ऐसा मान लो कि अब हम कुँआरे नहीं हैं। हम जंगली पशुकी तरह बिना मालिकके नहीं हैं। हम भगवान्‌के हैं। आप वास्तवमें सदासे ही भगवान्‌के हो, चाहे जानो या न जानो, मानो या न मानो। केवल अपना भाव बदलना है। (१६.५.२०००, प्रात: ८.३०, ऋषिकेश) (बिन्दुमें० १९३)

*** *** ***

परमात्मप्राप्ति करना चाहो तो अपनेको स्त्री-पुरुष मत मानो। अपना सम्बन्ध भगवान्‌से जोड़ो कि मैं तो भगवान्‌का हूँ। **अपनेको भगवान्‌का मान लो तो बड़ा भारी काम हो गया!** अपनेको स्त्री-पुरुष मानोगे तो भगवान् कैसे मिलेंगे? अपनेको स्त्री मानोगे तो पुरुष मिलेगा, भगवान् थोड़े ही मिलेंगे! परमात्मप्राप्तिमें स्त्रीपना-पुरुषपना भी बाधक है। स्त्री-पुरुषका भेद व्यवहारमें, लौकिक मर्यादामें आवश्यक है।

आप शरीर बने बैठे हो तो भगवान्‌की प्राप्ति कैसे होगी? आपका भीतरका ही भाव बदल जाय कि मैं तो भगवान्‌का हूँ। **भगवान्‌का सम्बन्ध ऐसा है, जो सभी झूठे सम्बन्धोंको काट देता है।** (२२.५.२०००, प्रात: ८.३०, ऋषिकेश) (बिन्दुमें० २०७)

*** *** ***

आप कितने ही पापी हों तो भी आप परमात्माके साथ हैं। पाप-पुण्य आपका स्पर्श ही नहीं करते। आप परमात्माके हैं और परमात्मा आपके हैं—इसको आप भूल जायँ तो भी बात वैसी-की-वैसी ही है। भूलना और न भूलना तो बुद्धिमें है। आपने जड़ (शरीर-संसार)-को पकड़ा है, तभी वह आपको अपनी तरफ खींचता है। आप सम्बन्ध मत मानो तो वह नहीं खींचेगा। भगवान्‌के साथ सम्बन्ध मान लो तो अनन्त जन्मोंके पाप छूट जायँगे।

मैं परमात्माका हूँ—यह चिन्तन करनेकी बात नहीं है, प्रत्युत माननेकी बात है। दो और दो चार ही होते हैं, इसमें चिन्तन करनेकी क्या बात है? (५.१०.१९९८, सायं ४, वृन्दावन) (सीमाके० ४६-४७)

***　　　***　　　***

मनमें कामना, राग-द्वेष न हों, पर भगवान्‌में अपनापन न हो तो मुक्ति हो जायगी, पर परमात्मा नहीं मिलेंगे। परन्तु मनमें कामना, राग-द्वेष हों, पर भगवान्‌में अपनापन हो तो परमात्माकी प्राप्ति हो जायगी। तात्पर्य है कि **निर्विकारताका सम्बन्ध मुक्तिके साथ है, पर अपनेपनका सम्बन्ध भगवान्‌के साथ है।** सुग्रीव कामी था, पर उसने भगवान्‌को अपना मान लिया। भगवान्‌को अपनापन सबसे अधिक प्यारा है—***'रामहि केवल प्रेमु पिआरा'*** (मानस, अयोध्या० १३७। १)। (८.११.१९९८, सायं ३.३०, बीकानेर) (सीमाके० ४७)

***　　　***　　　***

भगवान्‌में अपनेपनका सम्बन्ध प्रेम जाग्रत् करनेमें खास हेतु है। भगवान् न पुरुष हैं, न स्त्री हैं, न नपुंसक हैं, फिर भी सब कुछ हैं! इसलिये आप उनको पिता भी मान सकते हैं और माता भी। आप भगवान्‌से जो सम्बन्ध मानें, उसी सम्बन्धको माननेके लिये भगवान् तैयार हैं! सम्बन्ध माननेसे भगवान्‌में अपनापन होता है। भगवान् अपनेपनसे जितने जल्दी मिलते हैं, उतने जल्दी उद्योगसे नहीं मिलते।

आपके साथ बेटेका जितना सम्बन्ध होता है, उतना नौकरका सम्बन्ध नहीं होता। नौकरका सम्बन्ध काम-धंधेसे होता है, पर बेटेका सम्बन्ध काम-धंधेसे नहीं होता। नौकर काम-धंधा ठीक करे तो आप राजी होते हैं। परन्तु बेटा चाहे अनपढ़ हो, अयोग्य हो, तो भी वह पिताकी सम्पत्तिका पूरा मालिक होता है। **आप उद्योग करते हैं तो नौकर बनते हैं और भगवान्‌में अपनापन करते हैं तो बेटा बनते हैं!** (१.२.१९९९, सायं ४, गाँधीधाम) (सीमाके० ८९)

***　　　***　　　***

आप यह याद कर लिया करो कि हम उस भगवान्‌के अंश हैं, जिसके समान भी कोई नहीं है, फिर अधिक कैसे होगा! इसलिये आप मायासे डरो मत। **हम भगवान्‌के हैं—यह याद करनेसे अपने-आप बल आ जायगा।** हम अनाथ नहीं हैं, सनाथ हैं—इसको याद रखो। केवल भगवान्‌को याद न करनेके कारण आप हताश-निराश हो गये। भगवान्‌का बल क्या भगवान्‌के काम आयेगा? जैसे माँका दूध बच्चेके लिये होता है, माँके लिये नहीं, ऐसे ही भगवान्‌का बल हमारे लिये है। भगवान्‌का अंश होनेके कारण हम निर्बल नहीं हैं। हम जैसे भी हैं, भगवान्‌के हैं। कपूत क्या पूत नहीं होता? **हम भगवान्‌के हैं, फिर हम चिन्ता क्यों करें? चिन्ता वह करे जो भगवान्‌का न हो।** (२३.५.१९९९, सायं ४, ऋषिकेश) (सीमाके० १२८)

***　　　***　　　***

एक भगवान्‌के सिवाय कोई चीज मेरी नहीं—यह मान लो तो निहाल हो जाओगे। इसके समान आनन्दकी, शान्तिकी दूसरी कोई बात है ही नहीं! यह सब शास्त्रोंकी, सन्त-महात्माओंकी सार बात है। नामजप, भजन, कीर्तन आदि कोई साधनकी जरूरत नहीं, मन चाहे वशमें करो या न करो, बस, इतना मान लो कि भगवान्‌के सिवाय कोई चीज हमारी है ही नहीं। भगवान् कैसे हैं, इससे हमें कोई मतलब नहीं। वे जैसे भी हैं, हमारे हैं। (२८.५.१९९९, सायं ४, ऋषिकेश) (सीमाके० १३४)

***　　　***　　　***

अनन्त ब्रह्माण्डोंकी रक्षा करनेवाले परमात्मा हमारे पिता हैं, फिर हमें किस बातकी चिन्ता है? अगर आप स्वीकार कर लो कि 'भगवान् हमारे हैं, हम भगवान्‌के हैं' तो आपमें एक दिनमें

बड़ा भारी फर्क पड़ जायगा! आप निश्चिन्त, निर्भय हो जायँगे! **भगवान्‌को अपना मान लो तो सब काम पूरा हो जायगा, कोई काम किंचिन्मात्र भी बाकी नहीं रहेगा।** कर्मयोग, ज्ञानयोग, ध्यानयोग, भक्तियोग आदि कुछ बाकी नहीं रहेगा, साधक पूर्ण हो जायगा, कृतकृत्य, ज्ञातज्ञातव्य, प्राप्तप्राप्तव्य हो जायगा। अनन्त ब्रह्माण्डोंका पालन करनेवाले भगवान् हमारे हैं—यह मान लो तो अब क्या बाकी रहा, कैसे बाकी रहा? (१९.६.१९९९, सायं ४, ऋषिकेश) (सीमाके० १५०)

*** *** ***

प्रेमका मूल है—अपनापन। जिसमें हमारी प्रियता होगी, उसकी याद अपने-आप आयेगी। अपनी स्त्री, बेटा, बेटी इसलिये याद आते हैं कि उनमें हमारी प्रियता है, उनको हमने अपना माना है। **यदि भगवान्‌में प्रेम चाहते हो तो उनको अपना मान लो, फिर उनकी याद स्वतः आयेगी, करनी नहीं पड़ेगी।** आप जिसको परन्द करोगे, उसमें मन स्वतः लगेगा। भगवान् मेरे हैं—इसमें जो शक्ति है, वह त्याग-तपस्यामें नहीं है। (२६.६.१९९९, प्रातः ८.३०, ऋषिकेश) (सीमाके० १५५-१५६)

*** *** ***

जीवमात्र भगवान्‌का पुत्र है। चौरासी लाख योनियाँ और उनके सिवाय देव, राक्षस, असुर, भूत, प्रेत, पिशाच आदि जितनी योनियाँ हैं, वे भी भगवान्‌के पुत्र हैं। आप केवल स्वीकार कर लें कि हम भगवान्‌के पुत्र हैं तो क्या बाधा है? इतना स्वीकार कर लें तो बहुत काम हो गया! वर्षोंतक साधन करनेसे जो स्थिति नहीं बनती, वह स्थिति इतना स्वीकार करनेसे बन जायगी। (२७.६.१९९९, प्रातः ८.३०, ऋषिकेश) (सीमाके० १५६)

*** *** ***

'हम भगवान्‌के हैं'—यह इतनी बढ़िया बात मिल गयी, अब और क्या चाहिये? अगर हम इस बातको न भूलें कि हम भगवान्‌के हैं तो सब काम ठीक हो जायगा, ***'चेतन अमल सहज सुख रासी'*** का अनुभव हो जायगा। हमें साधन करना नहीं पड़ेगा, होने लग जायगा। **'हम भगवान्‌के हैं'—इस बातको याद रखें तो अवगुण नजदीक नहीं आयेंगे, भाग जायँगे। भूल जायँगे तो अवगुण घेर लेंगे।** (२९.६.१९९९, सायं ४, ऋषिकेश) (सीमाके० १५९)

*** *** ***

'हम भगवान्‌के हैं'—ऐसा मानकर आप सब-के-सब जहाँ हैं, वहीं रहते हुए सन्त हो सकते हैं। इसमें कोई आपको बाधा नहीं दे सकता।

अब तो हम भगवान्‌के हो गये—ऐसा मानकर आप तत्काल निश्चिन्त, निर्भय, निःशंक, निःशोक हो जाओ। जैसे बेटा स्वतः, बिना पढ़े-लिखे बापकी सम्पत्तिका मालिक होता है, ऐसे ही भगवान्‌का होनेपर आप भगवान्‌की सम्पत्तिके मालिक हो जाओगे। (२.८.१९९९, प्रातः ८.३०, नोखा) (सीमाके० १८३)

*** *** ***

महाभारतको देखें तो भगवान्‌ने पाण्डवोंके अनुकूल भी बहुत बातें कीं और प्रतिकूल भी बहुत बातें कीं। पर पाण्डवोंमें यह विलक्षणता थी कि उन्होंने भगवान्‌पर अश्रद्धा नहीं की। पाण्डवोंमें भीमसेन मुँहफट था, पर उसने भी भगवान्‌के विरुद्ध बात नहीं की। भगवान्‌पर श्रद्धा हो तो ऐसी हो! परन्तु दुर्योधनकी भगवान्‌पर श्रद्धा नहीं हुई। वह भगवान्‌को एक चालाक, चतुर आदमी मानता था। पाण्डवोंमें यह विशेषता थी कि वे मनके विरुद्ध बात होनेपर भी समझते थे कि भगवान् अपने हैं। इसी तरह **हमारे मनके विरुद्ध घटना होनेपर भी भगवान् अपने दीखने चाहिये।** (४.८.१९९९, प्रातः ८.३०, नोखा) (सीमाके० १८४)

*** *** ***

भगवान्‌के विषयमें बहुत-सी बातें आती हैं। परन्तु जो अपना कल्याण चाहता है, उसको 'भगवान् कैसे हैं, कैसे नहीं हैं'—इन बातोंमें नहीं पड़ना चाहिये। कल्याण करनेवाली बात यह है कि 'भगवान् हैं और वे जैसे भी हैं, हमारे हैं'। खास बात यह है कि 'हम सनाथ हैं, अनाथ नहीं हैं'—इस बातको पकड़ लेना चाहिये। (१७.८.१९९९, प्रातः ८, नोखा) (सीमाके० १९१)

*** *** ***

भगवत्प्राप्तिकी सबसे बढ़िया युक्ति यही है कि 'मैं भगवान्‌का हूँ'। मन-बुद्धि प्रकृतिके हैं। अतः मन-बुद्धि ठीक नहीं हैं तो प्रकृतिके ठीक नहीं हैं, मैं तो भगवान्‌का हूँ। जैसे भगवान् अविनाशी हैं, ऐसे ही मैं भी अविनाशी हूँ। जब भगवान् नहीं मरते तो फिर मैं कैसे मरूँगा? इसलिये सन्तोंने कहा है—

राम मरे तो मैं मरूँ, नहिं तो मरे बलाय।
अविनाशी का बालका, मरे न मारा जाय॥

'मैं भगवान्‌का हूँ, भगवान् मेरे हैं'—यह नामजपसे, भगवान्‌के स्मरणसे भी ऊँची बात है। यह असली भजन है। (२९.१०.१९९९, प्रातः ८.३०, श्रीडूँगरगढ़) (सीमाके० २२०)

*** *** ***

वास्तवमें भक्त वही है, जो भगवान्‌का है। जो भगवान्‌का होता है, वह साधारण आदमी नहीं होता। संसारका आदमी साधारण होता है। पदार्थ और क्रियाका सम्बन्ध इस लोकसे है। हमारा इनके साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। कोई काम करते समय यह सोच लो कि मैं भगवान्‌का हूँ तो यह काम किस ढंगसे करूँ, आपके मनमें स्वतः स्फुरणा हो जायगी। **आप सच्चे हृदयसे भगवान्‌को चाहोगे तो भगवान्‌का भजन क्या करें, यह आपके मनमें स्वतः आ जायगा।** (३०.१०.१९९९, प्रातः ८.३०, श्रीडूँगरगढ़) (सीमाके० २२१)

*** *** ***

'भगवान् मेरे हैं'—यह प्रेमका जनक है। प्रेम त्याग, तपस्या आदि साधनोंसे नहीं होता, प्रत्युत भगवान्‌में अपनेपनसे होता है। यह मार्मिक बात है! मेरेको तो व्याख्यान देते कई वर्ष हो गये, बादमें यह बात मालूम हुई! जो चीज अपनी होती है, वह स्वतः प्रिय लगती है। **'हम भगवान्‌के हैं, भगवान् हमारे हैं'—यह मामूली बात नहीं है। यह बहुत ऊँचा भजन है। इसके समान कोई साधन नहीं है। 'हम भगवान्‌के हैं, भगवान् हमारे हैं'—यह पता लग गया तो अब हमारा दूसरा जन्म क्यों होगा?** (२२.१२.१९९९, प्रातः ८.३०, कोलकाता) (सीमाके० २३१)

*** *** ***

सबसे अन्तिम, सबका निचोड़ यह बात है कि अपने केवल भगवान् हैं, उनके सिवाय कोई अपना नहीं है। भगवान् सदा हमारे साथमें रहते हैं। उनके सिवाय अन्य कोई भी सदा हमारे साथमें नहीं रहता। अगर इस बातको आप स्वीकार कर लो तो बहुत लाभकी बात है! जो चीज मिल जाय और बिछुड़ जाय, वह अपनी चीज नहीं होती। परन्तु भगवान् सदा ही मिले हुए रहते हैं, कभी बिछुड़ते नहीं। यह सब शास्त्रोंका, पुराणोंका, वेदोंका सार है! इसलिये सबके साथ प्रेमका बर्ताव करो, सबकी सेवा करो, सबका आदर करो, सत्कार करो, पर हृदयसे अपना मत मानो। हृदयसे केवल भगवान्‌को अपना मानो। दूसरोंको अपना मानोगे तो एक दिन रोना पड़ेगा। **सेवा करनेके लिये तो सभी अपने हैं, पर अपने लिये (लेनेके लिये) कोई अपना नहीं है। अपने लिये केवल**

भगवान् अपने हैं। भगवान्‌को आप सगुण-निर्गुण, साकार-निराकार आदि जैसा भी मानो, पर वे अपने हैं। यह आपको दुर्लभ और सार बात बतायी है, जो हरेक जगह मिलती नहीं! (२९.५.२०००, प्रातः ८.३०, ऋषिकेश) (नये रास्ते० ९)

*** *** ***

यमराजके सामने भी कह दो कि 'मैं भगवान्‌का हूँ' तो यमराज भी थर्रायेगा! अगर आप भगवान्‌के साथ सम्बन्ध स्वीकार कर लो तो आपमें स्वाभाविक ही शुद्धि, पवित्रता आ जायगी। हम भगवान्‌के हैं, भगवान् हमारे हैं—इतना कहनेमात्रसे आपमें स्वतः पवित्रता आती है। हम भले ही कपूत हों, पर हैं तो भगवान्‌के ही। हमें केवल अपनी कपूताई मिटानी है! (३.६.२०००, प्रातः ५, ऋषिकेश) (नये रास्ते० १३)

*** *** ***

शरीरसे जो साधन होता है, वह साधन भी दामी नहीं होता। **भीतरसे 'भगवान् मेरे हैं'—इसका जितना मूल्य है, उतना शरीरसे किये जप आदिका मूल्य नहीं है।** पतिव्रता स्त्री पतिका नाम नहीं लेती, पर पतिमें प्रेम कम होता है क्या? उसको सैकड़ों आदमियोंमें केवल पति अपना दीखता है।

नहीं रट्या तो का भया, घट्या न चाहिय हेत।
जैसे नार सुहागणी, पिव को नाम न लेत॥

परमात्माका अंश होनेसे आपकी एकता परमात्माके साथ है। शरीरकी एकता संसारके साथ है। शरीर अपना नहीं दीखे तो कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग—तीनों सुगम हो जायँगे। इतने वर्ष सत्संग करके भी शरीरको संसारका और अपनेको भगवान्‌का नहीं माना तो क्या किया! पण्डिताईकी सीखी हुई बातें काम नहीं देतीं। (९.६.२०००, प्रातः ८.३०, ऋषिकेश) (नये रास्ते० २५-२६)

*** *** ***

एक मार्मिक बात है कि जबतक परमात्माकी प्राप्ति नहीं हो जाती, तबतक किसीसे भी सम्बन्ध जोड़ना खतरनाक है! जब पहलेका सम्बन्ध भी आपसे नहीं टूटा तो फिर नया सम्बन्ध क्यों जोड़ते हो? पुराना सम्बन्ध भी आपके लिये टूटना मुश्किल हो गया, फिर नया सम्बन्ध जोड़ोगे तो क्या दशा होगी? बड़ी भारी आफत हो जायगी! **किसीसे भी सम्बन्ध जोड़ना पतनका कारण है।** जड़भरतने मृगसे सम्बन्ध जोड़ा तो उनको मृगयोनिमें जाना पड़ा! 'सम्बन्ध' शब्दका अर्थ ही है—सम्यक् प्रकारसे अर्थात् बढ़िया रीतिसे बन्धन। **नया सम्बन्ध जोड़ना नया खतरा है!** एक आदमीने दूसरेसे कहा कि मैं इस घोड़ीकी पूँछ पकड़ूँ तो क्या दोगे? वह बोला कि घोड़ी खुद ही दे देगी! ऐसी दुलत्ती मारेगी कि मर जाओगे! (९.३.२०००, सायं ३.३०, बीकानेर) (बिन्दुमें० ११२)

*** *** ***

साधकको चाहिये कि किसीके साथ सम्बन्ध न जोड़े। पहलेके जो सम्बन्ध हैं, वे भी टूटते नहीं, फिर नया सम्बन्ध क्यों जोड़ो? संसारका सम्बन्ध ही बाधक है—यह बड़ी दुर्लभ बात है! अपना सम्बन्ध केवल भगवान्‌के साथ ही रखो, जिनके आप अंश हो। आप मानो या न मानो, जानो या न जानो, बिलकुल भूल जाओ तो भी भगवान्‌के साथ आपका सम्बन्ध कभी टूटेगा नहीं। आप भगवान्‌के सम्बन्धको स्वीकार करोगे तो दुःख मिट जायगा। **मैंने जितनी पढ़ाई की है, पुस्तकें देखी हैं, विचार किया है, सबसे बढ़िया बात यह है कि हम भगवान्‌के हैं!** आप यह बात सदाके

लिये मान लो कि मैं बिना मालिकका नहीं हूँ; मैं भगवान्‌का हूँ। (१२.६.२०००, प्रात: ८.३०, ऋषिकेश) (नये रास्ते० ३८)

*** *** ***

अपनी दृष्टिसे जो बात मुझे सबके लिये बढ़िया लगती है, वह कहता हूँ। वेदोंकी, पुराणोंकी, शास्त्रोंकी, सन्त-महात्माओंकी दृष्टिसे भी जो बढ़िया बात है, वह कहता हूँ। उनसे विरुद्ध बात नहीं कहता। भूल हो सकती है, पर उसकी तरफ आप ध्यान न दें।

खास अपनी बात, अपने घरकी बात, अपनी व्यक्तिगत बात, अपनी खुदकी बात, अपनी गहरी बात, अपनी इज्जतकी बात, अपने लाभकी बात यह है कि हमारा सम्बन्ध भगवान्‌के साथ है, हम भगवान्‌के हैं। इसके समान बढ़िया बात कोई है ही नहीं! भगवान्‌ने भी कहा है कि जीवमात्र केवल मेरा ही अंश है—‘**ममैवांशो जीवलोके**’ (गीता १५। ७)। आपलोगोंसे यह प्रार्थना है कि भगवान्‌को अपना मानें। केवल इस बातको आप मान लें, फिर आपका सुधार स्वत:-स्वाभाविक होगा। (५.७.२०००, सायं ५.३०, दिल्ली) (नये रास्ते० ८५)

*** *** ***

समझमें आये या न आये, ऐसा मान लें कि हम भगवान्‌के हैं। बातें तो दूसरी बहुत हैं, पर ‘मैं भगवान्‌का हूँ’—यह सार बात है। इसलिये इस बातको मैं बार-बार कहता हूँ। आप कह सकते हो कि स्वामीजी एक ही बात बार-बार कहते हैं कि हम भगवान्‌के हैं। पर बार-बार कहनेपर भी आप नहीं मानते, फिर एक बार कहनेसे कैसे मान लोगे? इसलिये आप उकताओ मत। भगवान्‌के सिवाय कोई भी चीज आपके साथ रहनेवाली नहीं है। संसारमें आप खूब मौजसे रहो, पर ‘भगवान् मेरे हैं’—यह बात मत भूलो। फिर सब ठीक हो जायगा। त्याग, वैराग्य आदि सब अपने-आप होंगे। (२५.७.२०००, प्रात: ८.३०, रतनगढ़) (नये रास्ते० ११४)

*** *** ***

भक्ति जाग्रत् करनेका सरल उपाय है—भगवान्‌को अपना मानना। संसारमें भी देखते हैं कि मनुष्य जिसको अपना मानता है, वह प्यारा लगता है। हम भगवान्‌के हैं, भगवान् हमारे हैं—यह सार बात है। दूसरी सब बातें इसके अन्तर्गत आ जाती हैं। भगवान्‌को अपना मानना कल्याण करनेवाली चीज है। भगवान्‌को अपना समझनेमात्रसे भगवान् प्रसन्न हो जाते हैं। इसलिये आप भगवान्‌को माता, पिता, भाई, पति, पुत्र, मित्र, गुरु, चेला आदि कुछ भी मान लें।

माता रामो मत्पिता रामचन्द्र:
स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्र:।
सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालु-
र्नान्यं जाने नैव जाने न जाने॥

(श्रीरामरक्षास्तोत्र ३०)

‘राम मेरी माता हैं, राम मेरे पिता हैं, राम मेरे स्वामी हैं और राम मेरे सखा हैं। दयालु रामचन्द्र ही मेरे सर्वस्व हैं। उनके सिवाय और किसीको मैं नहीं जानता, बिलकुल नहीं जानता।’ (५.८.२०००, सायं ४, रतनगढ़) (नये रास्ते० १३३)

*** *** ***

‘मैं भगवान्‌का हूँ’—ऐसा भाव होनेसे अहंतामें भगवान्‌के साथ सम्बन्ध जुड़ जाता है। फिर भजन

बड़ा सुगम और श्रेष्ठ होगा। अहंता बदले बिना भजन बढ़िया नहीं होता। यह सिद्धान्त है कि आप भगवान्‌के हो जाओ तो भगवान्‌की प्राप्ति सुगमतासे होगी, नहीं तो भगवत्प्राप्ति कठिनतासे होगी। भगवत्प्राप्तिमें होनेवाली कई तरहकी कठिनताओंमें यह मुख्य कठिनता है। (१२.८.२०००, प्रातः ८.३०, रतनगढ़) (नये रास्ते० १४२)

*** *** ***

संसारमें केवल दिखावटी प्रेम करनेवाले हैं, असली नहीं हैं। भगवान् असली हमारे हैं। अपने प्यारे जितने भगवान् हैं, उतना अपना कोई नहीं है। शरीर अच्छा दीखता है, पर वह भी अपना नहीं है। **मैंने पुस्तकें भी पढ़ी हैं, सन्तोंका संग भी किया है, जहाँ कहीं अच्छी बातें सुननेको मिलीं, वहाँ गया भी हूँ। बहुत बातें देख करके, पढ़ करके, सुन करके, समझ करके, विचार करके मैंने निर्णय किया है कि भगवान्‌के समान अपना कोई नहीं है।** (१९.८.२०००, सायं ४, रतनगढ़) (नये रास्ते० १४७)

*** *** ***

मैं भगवान्‌का हूँ—यह सब बातोंकी सार बात है। भगवान् तथा उनके प्रेमकी प्राप्तिमें मेरापन ही खास चीज है, तप, दान, तीर्थ, व्रत आदि नहीं। सैकड़ों तप, व्रत, तीर्थ, उपवास आदि कर लो तो भी भगवान्‌में अपनेपनके समान कुछ नहीं है। भगवान्‌में अपनापन भजन-ध्यानसे भी श्रेष्ठ है! **भगवान्‌के नामका जप, भगवान्‌का चिन्तन, भगवान्‌का ध्यान, भगवान्‌में समाधि—इन सबसे श्रेष्ठ बात है कि 'मैं भगवान्‌का हूँ, भगवान् मेरे हैं'!** इसमें आपका विश्वास जितना दृढ़ होगा, उतना आपका काम ठीक हो जायगा।

भगवान् सर्वसमर्थ हैं, वे सब कुछ दे सकते हैं, सब कुछ कर सकते हैं, इसलिये मेरे हैं, मेरी सहायता करेंगे, मेरी रक्षा करेंगे—यह सकामभाव नहीं रहना चाहिये। भगवान् मेरे हैं, बस, उनसे कुछ लेना नहीं है। दर्शन भी दें या न दें, उनकी मरजी। भगवान् कहाँ हैं, कैसे हैं, क्या करते हैं, क्या नहीं करते हैं—इन बातोंकी इतनी जरूरत नहीं है, जितनी जरूरत मेरापनकी है। वे दर्शन दें तो मेरे हैं, दर्शन न दें तो मेरे हैं। वे सुख दें तो मेरे हैं, दुःख दें तो मेरे हैं। वे किसी भी परिस्थितिमें रखें तो भगवान् मेरे हैं, परिस्थिति मेरी नहीं है। (४.९.२०००, सायं ४, रतनगढ़) (नये रास्ते० १७०-१७१)

*** *** ***

भगवान् मेरे हैं—यह एक बात याद कर लो, मनमें जमा लो। हरदम भगवान्‌का होकर रहो। **भजन-ध्यानमें तो विघ्न पड़ता है, पर अपनेपनमें विघ्न नहीं पड़ता।** जैसे सूर्यका उदय होनेपर सूर्यको प्रकाश करना नहीं पड़ता, अपने-आप प्रकाश होता है, ऐसे ही भगवान्‌का होनेपर सुधार करना नहीं पड़ता, भगवान्‌की कृपासे अपने-आप सुधार होता है। 'मैं भगवान्‌का हूँ'—यह भाव ज्यों-ज्यों दृढ़ होगा, त्यों-त्यों आपमें विलक्षणता आयेगी, एक विशेष आनन्द होगा। भगवान्‌से दूरी, भगवान्‌से भेद और भगवान्‌से भिन्नता नहीं रहेगी। **भगवान्‌को अपना न माननेसे तरह-तरहकी, नयी-नयी आफत आयेगी, और भगवान्‌को अपना मान लेनेसे सब आफत मिट जायगी।** (४.९.२०००, सायं ४, रतनगढ़) (नये रास्ते० १७१)

*** *** ***

सम्पूर्ण जीव साक्षात् परमात्माके अंश हैं—***'ईस्वर अंस जीव अबिनासी'*** (मानस, उत्तर० ११७। १)। अतः हरेकके भीतर यह बात होनी चाहिये कि हम भगवान्‌के लाड़ले बेटा-बेटी हैं। **आप**

अपने-आपको भगवान्‌का अंश मानोगे तो बिना कहे-सुने आपमें अच्छे गुण, सद्‌गुण-सदाचार अपने-आप आ जायँगे। ऐसी-ऐसी बातें आपमें आ जायँगी कि खुद आपको आश्चर्य होगा! परन्तु यह होगा भगवान्‌के साथ अपना सम्बन्ध माननेसे। हम भगवान्‌के हैं—यह सब बातोंकी सार बात है। (१८.९.२०००, प्रातः ८.३०, जसवंतगढ़) (अनन्त० १८-१९)

*** *** ***

आप चाहे गृहस्थ हों या साधु हों, एक भगवान्‌को अपना मान लो तो आप श्रेष्ठ बन जाओगे। मीराबाईने भगवान्‌को अपना मान लिया था—***'मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई'***। मीराबाईका न तो कोई बेटा हुआ, न कोई चेला हुआ, पर सन्तलोग भी बड़े आदरसे उनका नाम लेते हैं!

नाम नाम बिनु ना रहे, सुनो सयाने लोय।
मीरा सुत जायो नहीं, शिष्य न मुंड्यो कोय॥

(१३.११.२०००, सायं ३.३०, बीकानेर) (अनन्त० ६६)

*** *** ***

जब एक उद्देश्य बन जायगा कि 'मैं भगवान्‌का हूँ और भगवान्‌की तरफ चलूँगा' तो यमराज आपसे डरेगा! बड़े-बड़े दोष आपसे डरेंगे! दोष स्वतः-स्वाभाविक दूर होंगे। आपपर कोई विजय नहीं कर सकेगा। भगवान् आपकी रक्षा करेंगे। जबतक एक उद्देश्य नहीं बनेगा, तबतक सब दोष आपको लूटेंगे, तंग करेंगे। मनुष्य एक राजाकी शरणमें चला जाय तो चोर-डाकू उससे डरने लगते हैं! आप भगवान्‌की शरणमें चले जाओ तो सब दोष आपसे डरेंगे। आपमें काम, क्रोध आदिको जीतनेकी ताकत आ जायगी। भगवान्‌के साथ आपको जो सम्बन्ध अच्छा मालूम दे, वह मान लो और निश्चिन्त हो जाओ। (२१.११.२०००, प्रातः ९, पटना) (अनन्त० ८०)

*** *** ***

आप भगवान्‌से सम्बन्ध जोड़ लो। यह प्रेम होनेका खास उपाय है। जबतक भगवान्‌से सम्बन्ध नहीं जोड़ोगे, तबतक प्रेमका उदय नहीं होगा। भगवान्‌को अपना मान लो, फिर सब काम ठीक हो जायगा। अच्छी बातें स्वतः-स्वाभाविक पैदा होंगी और उन बातोंका पालन भी होगा। (२३.११.२०००, सायं ३, बक्सर) (अनन्त० ८५)

*** *** ***

आपका शरीर माँ-बापका बेटा है, पर आप स्वयं भगवान्‌के बेटे हो। हम भगवान्‌के हैं—यह बात आप मान लो तो आपका सत्संग सफल हो गया! जैसे धनी आदमीके बेटेके भीतर एक गरमी रहती है, राजाके बेटेके भीतर एक गरमी रहती है, ऐसे ही आपके भीतर यह गरमी रहनी चाहिये कि मैं भगवान्‌का बेटा हूँ! (५.१.२००१, प्रातः ८.३०, हैदराबाद) (अनन्त० १४५)

*** *** ***

एक सीधी सरल बात—भगवान् मेरे हैं। ऐसे भगवान्‌को मेरा कह दिया तो बड़ा असर पड़ता है प्रभुपर। अनेक जन्मोंसे बिछुड़ा हुआ और चौरासी लाख योनियाँ भुगतता हुआ, दुःख पाता हुआ जीव अगर कह दे—'हे नाथ! मैं आपका हूँ। हे प्रभु! आप मेरे हो' तो प्रभुको बड़ा संतोष होगा। बड़े ही राजी होंगे भगवान्। मानो भगवान्‌की खोयी हुई चीज भगवान्‌को मिल गयी। (साधन-सुधा-सिन्धु २८८)

*** *** ***

जो साधनके बलपर चलते हैं, वे मजदूर होते हैं। माँ अपने बालकके कामका माप-तौल नहीं करती कि इसने इतना काम किया है तो इसको इतना भोजन दूँगी, इतना लाड़-प्यार करूँगी। कामका माप-तौल नौकरका होता है कि उसने कितना काम किया है और उस कामके अनुसार उसको वेतन मिलता है। लोगोंको तो धन, सम्पत्ति, वैभव आदिकी जरूरत रहती है, पर भगवान्‌को किसी चीजकी जरूरत है ही नहीं! अतः **जो अपने बलका आश्रय रखकर भजन करते हैं, साधन करते हैं, मनन-विचार करते हैं, वे सब मजदूरी करते हैं। इसलिये मजदूरीका बल न रखकर भगवान्‌में अपनेपनका बल रखना चाहिये।** (साधन-सुधा-सिन्धु ४२८)

***   ***   ***

स्त्री पतिव्रता होती है तो स्वयंसे होती है, करणसे नहीं। अन्तःकरण शुद्ध होनेपर पतिव्रता नहीं होती। क्या अन्तःकरण शुद्ध होनेपर विवाह होता है? यह तो स्वयंकी स्वीकृति है। स्वीकृतिका अन्तःकरणकी शुद्धि-अशुद्धिसे कोई सम्बन्ध नहीं है। स्वीकृति स्वयंकी होती है, करणकी नहीं। स्वयं भगवान्‌को अपना स्वीकार कर ले तो अन्तःकरण क्या करेगा? अन्तःकरण शुद्ध होनेपर क्या भगवान्‌को स्वीकार कर लेंगे? (१४.६.१९९८, सायं ४, ऋषिकेश) (स्वाति० १९२)

***   ***   ***

मैं संसारका हूँ—इसमें महान् पतन है। मैं भगवान्‌का हूँ—इसमें महान् उत्थान है। भगवान्‌में अपनापन होनेसे शरीरका अध्यास छोड़ना नहीं पड़ता, स्वतः छूट जाता है। **'मैं शरीर हूँ'—ऐसा मानोगे तो सब दोष आ जायँगे, पर 'मैं भगवान्‌का हूँ, भगवान् मेरे हैं'—ऐसा मानोगे तो कोई दोष नजदीक नहीं आयेगा।** (२०.५.१९९९, प्रातः ८.३०, ऋषिकेश) (सीमाके० १२५)

***   ***   ***

साधक अपनेको भगवान्‌का समझकर संसारका काम करे तो संसारका काम भी ठीक होगा और भगवान्‌का भी। परन्तु अपनेको संसारका समझकर संसारका काम करे तो संसारका काम भी ठीक नहीं होगा और भगवान्‌का काम (भजन) तो होगा ही नहीं! (अमृत-बिन्दु ४७६)

***   ***   ***

प्रभु अपने हैं, पर अपने लिये नहीं हैं, प्रत्युत हम प्रभुके लिये हैं। तात्पर्य है कि हमें प्रभुसे कुछ लेना नहीं है, प्रत्युत अपने-आपको उन्हें देना है और विपरीत-से-विपरीत परिस्थिति आनेपर भी उसको प्रभुका भेजा प्रसाद समझकर प्रसन्न रहना है। (अमृत-बिन्दु ४७७)

***   ***   ***

श्रवण-मनन-निदिध्यासन करनेकी, आँख-कान-नाक बन्द करनेकी जरूरत नहीं है। बात इतनी-सी ही है—***'मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई'***। भगवान्‌के सिवाय कोई अपना नहीं है। आपको नहीं जँचे तो भी मान लो। बात सच्ची है। इसको आप कठिन मत मानो। (२०.५.२०००, प्रातः ८.३०, ऋषिकेश) (बिन्दुमें० २०२)

***   ***   ***

जीव भगवान्‌का अंश है—इसके समान बढ़िया बात कोई है ही नहीं! **मेरा आपसे हाथ जोड़कर कहना है कि इस बातको महत्त्व दो कि मैं भगवान्‌का हूँ।** इस बातको आप पक्का करो। इसके समान कोई चीज है नहीं, हुई नहीं, होगी नहीं, हो सकती नहीं। (२१.६.२०००, प्रातः ८.३०, ऋषिकेश) (नये रास्ते० ६५)

*** *** ***

उद्धारके लिये मुझे सबसे बढ़िया यह बात मालूम दी कि 'हम भगवान्‌के हैं'। हम भगवान्‌के हैं—ऐसा मान लो तो इसको मैं सबसे बढ़िया भिक्षा मानता हूँ। **आप उम्रभर मुझे भिक्षा दो तो उसमें इतना फायदा नहीं है, जितना इस एक बातको माननेमें है कि 'मैं भगवान्‌का हूँ'।** (२७.६.१९९९, प्रात: ८.३०, ऋषिकेश) (सीमाके० १५६)

*** *** ***

हम यहाँ रहनेवाले नहीं हैं। हम यहाँ आये हैं और जाना है। जैसे धर्मशालामें ठहरते हैं, वैसे ही यहाँ अपनेको मानना चाहिये। यह शरीर भी अपना नहीं है, फिर दूसरा कौन अपना है? भगवान्‌के सिवाय दूसरा कोई अपना है नहीं। **केवल भगवान् ही हमारे हैं—यही पहली बात है, यही अन्तिम बात है, यही सार बात है।** (८.१०.१९९६, प्रात: ८.३०, वृन्दावन) (स्वाति० ५४)

*** *** ***

हमें तो वर्षोंके बाद यह सार बात जँची है कि भगवान्‌को अपना मानो। भगवान् अपने हैं, और कोई अपना नहीं है। यह हमारे मनकी बात है। इसके सिवाय और हम ज्यादा जानते नहीं! (१९.५.२०००, सायं ४, ऋषिकेश) (बिन्दुमें० २०१)



अमृत-बिन्दु

[परमश्रद्धेय श्रीस्वामीजी महाराजके मार्मिक वचन]

'हम भगवान्‌के हैं, भगवान् हमारे हैं'—यह असली मन्त्र है। इसे मान लो तो थोड़े दिनोंमें आपका जीवन बदल जायगा। (नये रास्ते० २१)

× × ×

कोई पूछे कि आप कौन हो, तो आपके भीतर सबसे पहले यह बात आनी चाहिये कि मैं भगवान्‌का हूँ। मैं भगवान्‌का हूँ—यह घरके भीतर गड़ा हुआ धन है, जिसको न जाननेके कारण आप गरीब होकर दु:ख पा रहे हैं! (बिन्दुमें० ३४)

× × ×

'हे नाथ! मैं आपका हूँ'—यह स्वीकार कर लो तो यह भगवान्‌के यहाँ बीमा हो गया! फिर हर समय भगवान्‌को याद करते रहो, नामजप करते रहो—यह उस बीमाकी किश्त भरना है। (ज्ञानके दीप० १०८)

× × ×

अनन्त ब्रह्माण्डोंमें केशभर भी कोई वस्तु अपनी नहीं है, पर अनन्त ब्रह्माण्ड जिसके एक अंशमें हैं, वे परमात्मा अपने हैं। (सीमाके० ८९)

× × ×

मनुष्यकी आफत, दु:ख मिटानेके लिये भगवान्‌के मनमें एक भूख है, लालसा है कि यह मुझे अपना कहे! सच्चे हृदयसे कह दे कि 'हे नाथ! मैं आपका हूँ' तो भगवान् खुश हो जाते हैं! (सत्संगके० १०६)

× × ×

जो किसीको भी अपना मानता है, वह वास्तवमें भगवान्‌को सर्वथा अपना नहीं मानता, कहनेको चाहे कहता रहे कि भगवान् मेरे हैं। (साधक० ५।२९)

× × ×

यदि भगवान्‌को याद करना पड़ता है तो समझें कि अभी भगवान्‌में अपनापन नहीं हुआ है। (सागरके० ७२)

× × ×

सदुपयोग करनेके लिये ही वस्तु अपनी है और अपने-आपको देनेके लिये ही भगवान् अपने हैं। इसलिये वस्तुको संसारमें लगा दे और अपने-आपको भगवान्‌में लगा दे। (अमृत० ६६)

× × ×

ऐसा मान लो कि मैं भगवान्‌का हूँ। अगर 'मैं संसारका हूँ' ऐसा मानोगे तो संसारका काम दूर रहा, भगवान्‌का भजन करते हुए भी भगवान्‌को भूल जाओगे! (अमृत० ६७)

× × ×

जैसे विवाहिता स्त्रीको पीहरकी याद आ जाय तो वह पीहरकी (कुँआरी) नहीं हो जाती, ऐसे ही हम भगवान्‌के हो गये तो अब भले ही संसारकी याद आ जाय, याद आनेसे हम संसारके थोड़े ही हो जायँगे! (स्वाति० १२९)

× × ×

भजन अखण्ड नहीं होता, पर सम्बन्ध अखण्ड होता है। इसलिये आप 'मैं भगवान्‌का हूँ'—इस प्रकार अपना अहम् बदल दें अर्थात् भगवान्‌के साथ सम्बन्ध जोड़कर एक जातिके हो जायँ तो जल्दी सिद्धि होगी। (सीमाके० ६)

× × ×

अगर आप अपना कल्याण चाहते हो तो केवल भगवान्‌के साथ सम्बन्ध जोड़ो। दूसरा कोई भी सम्बन्ध कल्याण करनेवाला नहीं है। सन्त-महात्मा भी भगवान्‌के साथ ही सम्बन्ध जोड़ते हैं। (सीमाके० ९३)

× × ×

वस्तुओं तथा व्यक्तियोंको अपना मानेंगे तो अभिमानरूपी विष चढ़ेगा, पर 'सब कुछ भगवान्‌का है और भगवान् मेरे हैं'—ऐसा माननेसे अभिमानरूपी विष नहीं चढ़ेगा; क्योंकि बीचमें भगवान् आ गये! (सीमाके० १०७)

× × ×

मेरा कुछ नहीं है और भगवान् मेरे हैं—ये दो बातें अगर आप स्वीकार कर लें तो बेड़ा पार है! बहुत जल्दी आपकी आध्यात्मिक उन्नति हो जायगी। अन्य उपायोंकी अपेक्षा यह उपाय बहुत जल्दी सिद्धि करनेवाला है। (बिन्दुमें० १९६)

× × ×

छोटा बालक माँ-माँ करता है तो उसका लक्ष्य, ध्यान, विश्वास 'माँ' शब्दपर नहीं होता, प्रत्युत माँके सम्बन्धपर होता है। ताकत 'माँ' शब्दमें नहीं है, प्रत्युत माँके सम्बन्धमें है। इसी तरह जो ताकत भगवान्‌के सम्बन्धमें है, वह नाममें नहीं है। (सीमाके० १४०)

× × ×

'जीव परमात्माका अंश है'—यह आपने सुन लिया है, पर 'मैं परमात्माका हूँ'—ऐसा आप मानते हो क्या? (सीमाके० ६४)

× × ×

जैसे विवाह होनेपर तत्काल बेटा नहीं होता, प्रत्युत समय पाकर होता है, ऐसे ही आप भगवान्‌के हो जाओ, फिर समय पाकर वह सब हो जायगा, जो आप चाहते हो। स्वतः अनुभव हो जायगा। (सीमाके० ८५)

× × ×

हृदयसे स्वीकार कर लो कि हम भगवान्‌के हैं, हम शुद्ध हैं, हम पापी हैं ही नहीं! हम भगवान्‌के हैं—इतना माननेमात्रसे अनन्त, अपार शुद्धि आ जायगी। (बिन्दुमें० १४२)

× × ×

आप पापी-से-पापी हों तो भी भगवान् मना नहीं कर सकते कि यह मेरा नहीं है। (सीमाके० १५१)

× × ×

आप भगवान्‌के हो जाओगे तो आपका सब काम भगवान्‌का हो जायगा। आप भगवान्‌के, घर भगवान्‌का, कुटुम्ब भगवान्‌का, वस्तुएँ भगवान्‌की—यह मान लो तो आपका सत्संग करना सफल हो गया! सब कुछ भगवान्‌का मान लें—इससे सरल उपाय और क्या बताऊँ? (सीमाके० ४१)

× × ×

किसी माँके दस बेटे हों तो माँके दस हिस्से नहीं होते, प्रत्युत माँ दसों बेटोंकी पूरी-की-पूरी होती है। ऐसे ही भगवान् हम सबके पूरे-के-पूरे हैं। (सीमाके० ८५)

× × ×

अपनेको भगवान्‌का मान लो, फिर किसी गुरुकी जरूरत नहीं है। (सीमाके० ८५)

× × ×

हम भगवान्‌के हैं और भगवान् हमारे हैं—इतना स्वीकार कर लो तो हमारा सत्संग सफल हो गया और आपका काम भी सफल हो गया। (सीमाके० ८५)

× × ×

केवल एक भगवान् मेरे हैं—इससे बढ़कर न यज्ञ है, न तप है, न दान है, न तीर्थ है, न विद्या है, न कोई बढ़िया बात है। (मानवमात्र० १९८)

× × ×

संसारको अपना मानना और भगवान्‌को अपना न मानना महान् अनर्थ है, महान् अनर्थ है, महान् अनर्थ है! मन मेरा है, बुद्धि मेरी है, शरीर मेरा है तो भगवान् कैसे मिलेंगे? (सीमाके० २०७)

× × ×

संसारमें मेरा कुछ नहीं है—यह संसारको पूरा जानना हो गया! संसारमें मेरा कुछ नहीं है—यह जान लो और भगवान् मेरे हैं—यह मान लो तो काम पूरा हो जायगा। (बिन्दुमें० १८८)

× × ×

समझमें नहीं आये तो भी भगवान्‌को अपना मान लो। उनको नकली भी अपना मान लो तो वह असली हो जायगा; क्योंकि असलमें वे अपने हैं। (सीमाके० २१०)

× × ×

अगर आपमें भगवान्‌पर श्रद्धा-विश्वास है और 'भगवान् मेरे हैं'—ऐसा भाव है तो आप भले ही पढ़े-लिखे न हों, सबसे तेज हो जाओगे। (अनन्त० १३७)

× × ×

भगवान्‌को अपना मान लो तो सब कमी पूरी हो जायगी। भगवान्‌के साथ सम्बन्ध जुड़ते ही आपकी कपूताई मिट जायगी, आप सपूत हो जाओगे। आप भगवान्‌के पहले हैं, कपूत बादमें हुए हैं। (अनन्त० ४२)

× × ×

मैं अच्छा या मन्दा जैसा हूँ, भगवान्‌का हूँ। फिर सब काम ठीक हो जायगा। आपके आचरण, आपके भाव, आपका जीवन अपने-आप सुधर जायगा। (नये रास्ते० १४३)

× × ×

'हम भगवान्‌के हैं, भगवान् हमारे हैं'—यह असली मन्त्र है। इसे मान लो तो थोड़े दिनोंमें आपका जीवन बदल जायगा। (नये रास्ते० २१)

× × ×

हम संसारको जितना अपना मानते हैं, उतना भगवान्‌से अपनापन हट जाता है। (स्वाति० ९१)

× × ×

प्रेमके सिवाय और किसीमें भगवान्‌को खींचनेकी ताकत नहीं है। उस प्रेमकी प्राप्तिमें खास चीज है—अपनापन। अपनापन भगवान्‌को खींचता है। बालकका अपनापन ही माँको खींचता है। अतः अपनापन ही भगवान्‌के प्रकट होनेमें खास कारण है। (स्वाति० ९१)

× × ×

जब मनुष्य भगवान्‌से कहता है कि 'हे नाथ! मैं आपका हूँ, आप मेरे हो' तो इसे सुनकर भगवान् बड़े प्रसन्न होते हैं। यह भीतरकी मार्मिक बात है। (स्वाति० १०७)

× × ×

'मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई'—बस, इतनी ही बात है, लम्बी-चौड़ी बात है ही नहीं! मीराबाईने सबको रास्ता बता दिया! (बिन्दुमें० ११५)

× × ×

'मैं भगवान्‌का हूँ और भगवान् मेरे हैं'—इस अपनेपनके समान योग्यता, पात्रता और अधिकारिता आदि कुछ भी नहीं है। यह सम्पूर्ण साधनोंका सार है। (साधक० १८।६६)

× × ×

आपसे कोई पूछे, कभी पूछे कि कहाँके हो? कौन हो? तो स्वतः मनमें आना चाहिये कि मैं भगवान्‌का हूँ। यह बात हरेकके सामने नहीं कहनी है, पर मनमें यही बात पैदा होनी चाहिये कि मैं भगवान्‌का हूँ। (अनन्त० १४)

× × ×

भगवान् हमारे हैं, उनके सिवाय कोई हमारा नहीं है—ऐसा मान लो तो आप जीवन्मुक्त, तत्त्वज्ञ, महात्मा हो जाओगे। भगवान्‌के सिवाय अगर गुरुको भी अपना मान लिया तो बाधा लगी है, फायदा नहीं हुआ है। (सीमाके० १५७)

× × ×

'हम भगवान्‌के हैं, भगवान् हमारे हैं'—यह बात आप दाँत भींचकर, आँखें मीचकर, छाती कड़ी करके मान लो! जब स्थूल, सूक्ष्म और कारणशरीर भी अपना नहीं है, तो फिर संसारमें क्या चीज अपनी रही? (सीमाके० १३०)



॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

आधार-ग्रन्थ-सूची

१. साधक-संजीवनी
२. साधन-सुधा-सिन्धु
३. मानवमात्रके कल्याणके लिये
४. अमृत-बिन्दु
५. ज्ञानके दीप जले
६. सत्संगके फूल
७. सागरके मोती
८. सीमाके भीतर असीम प्रकाश
९. बिन्दुमें सिन्धु
१०. अनन्तकी ओर
११. स्वातिकी बूँदें
१२. नये रास्ते नयी दिशाएँ

===::0::===

समस्त साधनोंका सार

साधकको ये चार बातें दृढ़तापूर्वक मान लेनी चाहिये—

१. परमात्मा यहाँ हैं
२. परमात्मा अभी हैं
३. परमात्मा अपनेमें हैं
४. परमात्मा अपने हैं

परमात्मा सब जगह (सर्वव्यापी) होनेसे यहाँ भी हैं;
सब समय (तीनों कालोंमें) होनेसे अभी भी हैं;
सबमें होनेसे अपनेमें भी हैं; और
सबके होनेसे अपने भी हैं।

इस दृष्टिसे—

परमात्मा यहाँ होनेसे उनको प्राप्त करनेके लिये दूसरी जगह जानेकी आवश्यकता नहीं है;

अभी होनेसे उनकी प्राप्तिके लिये भविष्यकी प्रतीक्षा करनेकी आवश्यकता नहीं है;

अपनेमें होनेसे उन्हें बाहर ढूँढ़नेकी आवश्यकता नहीं है; और

अपने होनेसे उनके सिवाय किसीको भी अपना माननेकी आवश्यकता नहीं है। अपने होनेसे वे स्वाभाविक ही अत्यन्त प्रिय लगेंगे।

प्रत्येक साधकके लिये उपर्युक्त चारों बातें अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और तत्काल लाभदायक हैं। साधकको ये चारों बातें दृढ़तासे मान लेनी चाहिये। समस्त साधनोंका यह सार साधन है। इसमें किसी योग्यता, अभ्यास, गुण आदिकी भी जरूरत नहीं है। ये बातें स्वत:सिद्ध और वास्तविक हैं, इसलिये इसको माननेके लिये सभी योग्य हैं, सभी पात्र हैं, सभी समर्थ हैं। शर्त यही है कि वे एकमात्र परमात्माको ही चाहते हों।

—'साधक-संजीवनी' १५। ११ से



॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराजकी वाणीपर आधारित
'गीता प्रकाशन' का शीघ्र कल्याणकारी साहित्य

१. **संजीवनी-सुधा**—'गीता साधक-संजीवनी' पर आधारित शोधपूर्ण पुस्तक।
२. **सीमाके भीतर असीम प्रकाश**—मार्मिक प्रवचनोंका सार-संग्रह।
३. **बिन्दुमें सिन्धु**—मार्मिक प्रवचनोंका सार-संग्रह।
४. **नये रास्ते, नयी दिशाएँ**—मार्मिक प्रवचनोंका सार-संग्रह।
५. **अनन्तकी ओर**—मार्मिक प्रवचनोंका सार-संग्रह।
६. **स्वातिकी बूँदें**—मार्मिक प्रवचनोंका सार-संग्रह।
७. **अनुभव-वाणी**—चुने हुए अनमोल वचन। अँग्रेजी-भाषान्तरसहित।
८. **सहज गीता** (अँग्रेजीमें भी)—नये पाठकोंके लिये गीताका सरल हिन्दीमें भावार्थ।
९. **हे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं** (गुजराती व अँग्रेजीमें भी)—इस प्रार्थनाके रहस्य तथा महत्त्वका अद्‌भुत वर्णन।
१०. **कृपामयी भगवद्‌गीता** (गुजराती व अँग्रेजीमें भी)—गीताकी महिमा और उसकी विलक्षणता।
११. **लक्ष्य अब दूर नहीं** (गुजरातीमें भी)—परमात्मप्राप्तिके विविध सुगम साधनोंका अनूठा संकलन।
१२. **सहज समाधि भली** (गुजरातीमें भी)—'चुप साधन' का विस्तृत विवेचन।
१३. **अपने प्रभुको पहचानें**—भगवान्‌के समग्ररूपका विस्तृत विवेचन।
१४. **एक सन्तकी अमूल्य शिक्षा** (क्या करें, क्या न करें)
१५. **विलक्षण सन्त, विलक्षण वाणी**—परमश्रद्धेय श्रीस्वामीजी महाराजकी वसीयत-सहित।
१६. **गोरक्षा—हमारा परम कर्तव्य**
१७. **क्या करें, क्या न करें?**—आचार-व्यवहारसे सम्बन्धित शास्त्र-वचनोंका अनूठा संग्रह।
१८. **भवन-भास्कर** (परिशिष्ट-सहित)—वास्तुशास्त्रकी महत्त्वपूर्ण बातें।
१९. **सुखपूर्वक जीनेकी कला**—सर्वोपयोगी प्रश्नोत्तर।
२०. **क्या आप ईश्वरको मानते हैं?**—साधकोंके लिये चेतावनी।
२१. **सन्तवाणी (प्रथम शतक)**—चुने हुए सौ अनमोल वचन।
२२. **सन्तवाणी (द्वितीय शतक)**—चुने हुए सौ अनमोल वचन।
२३. **रहस्यमयी वार्ता**—हस्तलिखित डायरीसे। विविध विषयोंसे सम्बन्धित मार्मिक प्रश्नोत्तर।
२४. **मेरे नाथ! मेरे प्रभो!**—भगवान्‌से अपनापन-सम्बन्धी बातोंका अनूठा संकलन।
२५. **बोलनेवाली श्रीमद्भगवद्गीता** (अर्थसहित)—इसे पढ़नेके साथ-साथ शुद्ध उच्चारणमें सुन भी सकते हैं।
२६. **ग्लोब गीता**—आकर्षक ग्लोबके आकारमें सम्पूर्ण गीता।

पुस्तकें मँगवानेका पता—

गीता प्रकाशन कार्यालय,
माया बाजार, पश्चिमी फाटक,
गोरखपुर—273001 (उ०प्र०)
फोन—09389593845, 09453492241
e-mail: **radhagovind10@gmail.com** website: **www.gitaprakashan.com**